नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

हिंदी विश्वविद्यालय में कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने किया ध्वजारोहण

एक लक्ष्य, एक दिशा के लिए परिवार भाव का संकल्प लें – प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल

वर्धा , 26 जनवरी 2020 : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में गणतंत्र दिवस के अवसर पर कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने ध्वजारोहण कर विश्वविद्यालय परिवार को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि एक लक्ष्य, एक दिशा और एक जन की प्रक्रिया निरंतर चलती

रहनी चाहिए। परिवार भाव को जारी रखते हुए हमें अपना लक्ष्य पाने के लिए संकल्पबद्ध होना चाहिए। विश्वविद्यालय के वाचस्पति भवन के प्रांगण में प्रात: 9.30 बजे कुलपति प्रो. शुक्ल के हाथों ध्वजारोहण किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में कार्य परिषद की सदस्या प्रो. कुसुमलता केडिया उपस्थित थी। इस अवसर पर प्रतिकुलपति द्वय प्रो. हनुमानप्रसाद शुक्ल, प्रो. चंद्रकांत रागीट, शिक्षा एवं प्रबंधन विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. मनोज कुमार, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. कृपाशंकर चौबे, संस्कृति विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. नृपेंद्र प्रसाद मोदी, साहित्य विद्यापीठ की अधिष्ठाता प्रो. प्रीति सागर एवं कुलसचिव कादर नवाज़ ख़ान मंच पर उपस्थित थे। ध्वजारोहण से पहले कुलपति प्रो. शुक्ल ने गांधी हिल पर महात्मा गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर अभिवादन किया। ध्वजारोहण समारोह में धर्मपाल शोध पीठ, भोपाल के पूर्व अध्यक्ष, गांधी चिंतक रामेश्वर मिश्र 'पंकज', शैक्षणिक, गैर-शैक्षणिक कर्मी, शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। ध्वजारोहण के बाद सुरक्षा कर्मियों ने बैंड पर राष्ट्रगान प्रस्तुत किया और सलामी दी।

कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने अपने संबोधन में कहा कि गणतंत्र दिवस हम सभी के लिए मूल्यांकन का पर्व है। हमारे क्रांतिदर्शी नेतृत्व ने स्वतंत्रता के बाद विश्लेषण और विवेचन कर सारतत्व को ग्रहण करते हुए संविधान को स्वीकार किया। उन्होंने संविधान के विशेषता को उल्लेखित करते हुए कहा कि हमारे राष्ट्र ध्वज में धर्म चक्र का प्रतीक चिन्ह मध्य मार्ग का निर्देशक

है।यह शासन और जन को एक सीमा तक स्वतंत्रता देता है और एक सूत्र में बांधता भी है । 70 वर्षों की हमारी यात्रा सभी क्षेत्रों के विशिष्ट रही है। इस यात्रा में भारत आसेतु हिमालय, कश्मीर से कन्याकुमारी, कच्छ से अरुणाचल तक एक रूप में बढ रहा है। यह हमारी ऐतिहासिक विकास यात्रा है और नि:संदेह भारत आज विश्व की महाशक्ति के रूप में खड़ा है।

हिंदी और विश्वविद्यालय के दायित्व का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी भाषा को ज्ञान-विज्ञान और तकनीक की भाषा के रूप में विकसित करने का बड़ा दायित्व हमारे हिस्से में आया है जिस पर बड़ा काम किया जाना शेष है। हमारे लिए यह विशेष संकल्प का अवसर है।

दुनिया में भाषाओं का महत्व बढ़ा है, बल्कि 1990 के बाद और 21वीं सदी में कंप्यूटरीकरण और डिजिटाइजेशन से भाषाओं का महत्व और भी बढ़ गया है। इससे ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में क्रांति की गति भी तेज हो गयी है। कंप्यूटर के आने से तकनीक पर एकाधिकार समान हुआ है। महान लक्ष्य की दिशा में विश्वविद्यालय ने कुछ उपलब्धियां हासिल की है। संगणक आने से मानवीय मेधा की क्षमता और रोज़गार के अवसर भी बढ़ गये है और नौजवाने ने इस क्षेत्र में अनेक उपलब्धियां अर्जित की है। अंतिम आदमी तक तकनीक, ज्ञान और कौशल को विस्तारित करने की कोशीश हुई है। यह भाषा के क्षेत्र में हुआ तो सपनों को पूरा कर सकेंगे । उन्होंने कहा कि बुद्ध की करुणा, शंकराचार्य की एकात्मता, गांधी की भारत भक्ति और डॉ. अंबेडकर की समता-समानता के संकल्प सी.राजगोपालाचारी,चंद्रशेखर आज़ाद, सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह, अस्फाक उल्ला खान, रामप्रसाद बिस्मिल खान, चाफेकर बंधु आदि के बलिदानों को याद कर उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। उन्होंने विश्वविद्यालय परिवार से आग्रह किया कि आकाक्षांओं और अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए परिवार भाव के साथ काम कर विश्वविद्यालय को आगे ले जाना होगा। इस संबंध में उन्होंने बुद्ध के काल के गणतंत्र का उदाहरण दिया। हमने इस दिशा में पिछले 22 वर्षों में काफी कुछ हासिल किया है। तकनीक और ज्ञान अंतिम जन तक पहुंचाने की हमारी जिम्मेदारी है और गणतांत्रिक भावना से इस लक्ष्य को पाने के लिए हमें प्रयासरत रहना चाहिए। ध्वजारोहण समारोह में विश्वविद्यालय के कर्मी, शोधार्थी, विद्यार्थी और गणमान्य नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित थे।